बृंदावन राय सरल

अपने ज़हनों के दीमक को खाती है।।
मश्क हमारी मंज़िल तक ले जाती है।।

किस किस को तुम रोकोगे सच कहने से।
आज हवा तक यहां मर्सिया गाती है।।

दुनिया भर के ग़म छू मंतर हो जाते।
मां जब-जब मेरे सर को सहलाती है।।

हम सब ही इक मुठ्ठी में बँध जाते हैं।
जब जब हम पर कोई मुसीबत आती है।।

तानसेन का होता है अहसास सरल।
मां कोई लोरी जब घर में गाती है।।

पतझड़ के मौसम पैदा कर जाते हैं।।
लोगों के अहसास जहां मर जाते हैं।।

जिनकी शाखें मीठे फल से लद जातीं।
उनके आंगन पत्थर से भर जाते हैं।।

बचपन से ही मश्क मुसलसल है जिनकी।
पर्वत पर भी दौड़ दौड़ कर जाते हैं।।

हमसे कोई हमको ही छल जाता है।
उनसे मिलकर जब भी हम घर जाते हैं।।

लाश नदी में कोई बहाता है जब भी।
साथ हमारे फिक्र के लश्कर जाते हैं।।

दिन भर हमसें काम करावें।।
पईसा मांगो लठ्ठ दिखावें।।

पुल सड़कें नहरें जे खावें।।
ऊपै गांवों में गर्रावें।।

कुछ आदमी अबे गांव में,
पंगत मचा मचा कें खावें।।

ऐसे गुंडा बाखर बारे।
जबरन सबकी हँसी उडावें।।

उनकी मौडी उड़ें हवा में,
अपनी उपनए शाला जावें।।

सागर मध्य प्रदेश

ISSN:2583-8849